लोक-जीवन के यात्रिक का रचना संसार

किताबघर

यतीन्द्र मिश्र

देवेंद्र सत्यार्थी रचना संचयन
चयन एवं संपादन : प्रकाश मनु
पहला संस्करण, 2023
साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
मूल्य : 400 रुपये

लोक साहित्य के पितृपुरुष देवेंद्र सत्यार्थी ने अपना जीवन ही भारतीय लोकगीतों और ग्राम्य कथाओं के संकलन, खोज और दस्तावेजीकरण में समर्पित कर दिया था। अपनी यायावरी के लगभग तीन-चार दशकों में उन्होंने अथक कष्ट उठाकर जो भारत परिक्रमा की, उसके तहत लगभग तीन लाख गीतों का संकलन किया और उसे समाज को अर्पित कर दिया। ऐसे आधुनिक भारत के संस्कृति दूत कहे जाने वाले सत्यार्थी जी अपने जीवन में ही किंवदंती बन गए थे, जिनके बारे में भाषा विज्ञानी सुनीति कुमार चटर्जी, इतिहासकार वासुदेवशरण अग्रवाल, कवयित्री अमृता प्रीतम और पंडित मदन मोहन मालवीय ने अपनी आत्मीयता उजागर करने के साथ उनका महिमामंडन किया। स्वयं महात्मा गांधी ने उनके इस काम से प्रेरित होकर वर्ष 1936 में कांग्रेस के फैजपुर अधिवेशन में भाग लेने के लिए उन्हें न्यौता भेजा। इस अधिवेशन में सत्यार्थी जी ने अंग्रेजी राज में हाहाकार करती जनता के दर्द पर एक लोकगीत सुनाया था, जिसे सुन गांधी जी ने रोमांचित होकर कहा था- 'अगर तराजू के एक पलड़े पर मेरे व जवाहर लाल के सारे भाषण रख दें और दूसरे पर अकेला यह लोकगीत, तो लोकगीत वाला पलड़ा ही भारी रहेगा।' ऐसे लोकसाहित्य के दरवेश देवेंद्र सत्यार्थी की रचनाओं का यह संचयन बेहद मानीखेज है, जिसे प्रतिष्ठित बाल साहित्यकार प्रकाश मनु ने संपादित किया है। यह भी काबिलेगौर है कि सत्यार्थी जी ने ही स्त्रियों के कंठ में बसे देशज और वाचिक परंपरा के गीतों को 'लोकगीत' शब्द प्रदान किया था, जिसे बाद में आल इंडिया रेडियो समेत देश की अन्य प्रमुख संस्थाओं ने मान्यता दी। आज 'लोकगीत', 'लोककथा', 'लोकसाहित्य', 'लोककला' और 'लोकायन' जैसे शब्दों के हिंदी में प्रचलन का बड़ा श्रेय देवेंद्र सत्यार्थी के नाम ही दर्ज है। उन्हीं की तर्ज पर पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने भी ऐसे गीतों का संकलन-संपादन किया था, जिसे वे 'ग्रामगीत' कहते थे। रामनरेश त्रिपाठी का यह कथन उनके संदर्भ में ध्यान देने लायक है- 'ग्रामगीतों के संबंध में जिस मार्ग पर चलने की इच्छा मैं वर्षों से कर रहा था, उसे तो आपने नाप डाला... इसे क्षेत्र में आप ही पहले और आप ही अंतिम हैं।'

यह संचयन सात खंडों में विभक्त है, जिसमें उनके द्वारा रची गई रचनाओं को क्रमशः लोक निबंध, कहानी, कविता, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा-वृत्तांत और आत्मकथा में रखा गया है। उनके महीयसी योगदान को देखकर अचरज होता है कि किस तरह एक सहज जीवनयात्री यायावर ने अपने जीवन के संचित संस्मरणों को साहित्य की विभिन्न विधाओं में रूपायित करते हुए कितना बड़ा रचनात्मक अवदान किया है। यह भी रेखांकित करने योग्य है कि वे कहानियों की ओर इस कारण मुड़े कि जब भी वे किसी शहर, गांव या सुदूर क्षेत्र की कोई बात अपने मित्र राजेंद्र सिंह बेदी को सुनाते थे, जो एक सफल कहानीकार और फिल्म पटकथाकार हुए, तो उनकी अचानक इस टिप्पणी पर उनका मनोबल ऊंचा हो जाता था- 'अरे यह तो कहानी हो गई।' इसी बात की प्रेरणा ने उन्हें कहानियां लिखने के लिए प्रेरित किया। इस संकलन में उनकी शुरुआती कहानी 'कुंगपोश' शामिल है, जो कश्मीर के केसर के खेतों और वहां के मादक प्राकृतिक सौंदर्य के रंग को उद्भासित करती है। 'ब्याह के ढोल', 'शाल', 'हिंदुस्तान', 'नर्तकी', 'प्रेयसि', 'संथाल कुलवधू', 'गेहूं की बालियां', 'गुलमुहर के फूल' और 'बंदनवार' जैसी ऐतिहासिक कविताएं भी सम्मिलित हैं, जिसमें कहीं न कहीं प्रकृति, ग्राम्य जीवन, कृषक समाज, रेशम से वस्त्र बनाने का मामला, ब्याह के संस्कार गीत और घर-घर बजने वाले ढोल आदि का भावुक चित्रण उस दौर की रचनात्मकता को प्रशस्त ढंग से उभारता है। यह भी गौरतलब है कि लोकसाहित्य के उत्खनन कार्य में उनकी मुलाकात गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर से हुई थी, जो अत्यंत प्रगाढ़ता में तब्दील हुई। जिनके विचारों का उनपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि क्षेत्रीय भाषाओं के गीतों को एकत्र करने की साध को भी दिशा मिली। शायद इसी कारण 'रवींद्रनाथ ठाकुर' जैसे संस्मरण में वे रवींद्रनाथ का सादगी-भरा मगर विलक्षण चित्र खींचते हैं। इस छोटे से संस्मरण में इतनी ऐतिहासिक बातें समाई हुई हैं कि वह एक बड़े वृत्तचित्र का कथानक लगती है। यह संस्मरण इस बात को रेखांकित करने के लिए भी पढ़ा जाना चाहिए कि पिछली पीढ़ी में दो अलग-अलग मूर्धन्यों का आपसी सामंजस्य और सौहार्दपूर्ण रिश्ता कितना सरल, सात्विक और अर्थपूर्ण होता था।

'मणिपुर' और 'गोदावरी नदी' पर उनका रेखाचित्र हो, लाहौर पर यात्रा-वृत्तांत या मुल्कराज आनंद और प्रेमचंद पर संस्मरण, सभी संजोने लायक हैं, जिसे बड़े सुरुचिपूर्ण ढंग से इसमें रखा गया है। पुस्तक का अंतिम 'आत्मकथा' खंड बहुत ईमानदारी से लिखा गया है, जिसमें उस दौर की भाषायी समृद्धि झलकती है, जैसी भाषा की तराश हम काका कालेलकर, वियोगी हरि, हजारी प्रसाद द्विवेदी व वासुदेवशरण अग्रवाल की लेखनी में पाते हैं। भाषा का सहज प्रांजल, कभी बंकिम सा लगता हुआ सलोना गद्य इस पाठ की उपलब्धि सरीखा है। देवेंद्र सत्यार्थी को पढ़ने, समझने, जानने व गुनने के लिए यह बेहतरीन संचयन है, जिसके लिए प्रकाश मनु और साहित्य अकादेमी साधुवाद के पात्र हैं।

आप भी कुछ कहना चाहते हैं...
kitabghar@nda.jagran.com